आचार्य कुन्दकुन्द

जीवन-परिचय : श्रमण-कुल के गौरव आचार्य कुन्दकुन्द जैनदर्शन के प्रधान विद्वान एवं महर्षि थे। वे बड़े तपस्वी थे। जैनागम के रहस्य के विशिष्ट ज्ञाता थे। वे रत्नत्रय से पूर्ण और संयमनिष्ठ मुनि थे। उनकी प्रशान्त एवं दिगम्बर मुद्रा, सौम्य आकृति देखने से परम शान्ति का अनुभव होता था। उनका व्यक्तित्व असाधारण था। वे मोक्षमार्ग की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। उनकी आत्म साधना कठोर थी।

आचार्य कुन्दकुन्द जैन परम्परा के एक ऐसे सर्वमान्य आचार्य हैं, जिनके ग्रन्थों का स्वाध्याय सभी स्वाध्यायी करते हैं। भगवान महावीर की वाणी का सार और अध्यात्म का रहस्य आपने अपनी कृतियों में उद्घाटित किया है। आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों को पढ़े बिना जैनदर्शन का हृदय समझ पाना मुश्किल ही नहीं, असम्भव है।

आपके 5 नाम प्रसिद्ध हैं : आचार्य कुन्दकुन्द, पद्मनन्दी, वक्रग्रीवाचार्य, एलाचार्य, गृद्धपिच्छाचार्य। विभिन्न नामकरण का कारण है :

1. जन्मस्थान के नाम से इन्हें कुन्दकुन्द नाम प्राप्त हुआ।
2. अधिक स्वाध्याय करने से इनकी ग्रीवा टेढ़ी हो गयी, जिसके कारण इन्हें वक्रग्रीव कहा गया।
3. जब यह विदेह क्षेत्र गए तब वहाँ की अपेक्षा इनका शरीर अति लघुकाय होने के कारण इनका नाम एलाचार्य पड़ गया।
4. एक बार इनकी मोरपंख की पिच्छिका गिर गयी तो इन्हें गृद्धपिच्छ (गिद्ध के पंखों की पिच्छिका) धारण करना पड़ा, जिसके कारण इनका नाम गृद्धपिच्छ पड़ा।

विभिन्न विद्वानों के मतानुसार आचार्य कुन्दकुन्द का समय ई. सन् प्रथम शताब्दी माना जाता है।

इनका जन्म स्थान दक्षिण भारत में तमिलनाडु में पोन्नूरमलैं के निकट

कौण्डकुन्दपुर माना जाता है। इनके पिता का नाम करमण्डु और माता का नाम श्रीमती था। इन्होंने मात्र 11 वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण की। इनके गुरु आचार्य जिनचंद्र स्वामी (अथवा आचार्य श्रुतकेवली भद्रबाहु) हैं। दूसरी सदी के पूर्वार्द्ध में, विक्रम संवत् 49 में 44 वर्ष की आयु में इन्होंने आचार्य पद ग्रहण किया और 51 वर्ष, 10 माह 15 दिन तक वे उस पद पर प्रतिष्ठित रहे। आचार्य कुन्दकुन्द की कुल आयु 95 वर्ष, 10 माह, 15 दिन मानी जाती है। आचार्यश्री की समाधि ई. पूर्व 12 में हुई।

आचार्य कुन्दकुन्द ने तत्कालीन परिस्थिति का अच्छी तरह से अवलोकन किया। दिगम्बर मूलसंघ को यथावस्थित रखने के लिए भगवान महावीर के मूल आगम पर आधारित साहित्य की रचना की। इनकी रचनाओं को परमागम कहा जाता है।

भगवान महावीर और गौतम स्वामी के बाद आचार्य कुन्दकुन्द का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। आपको महत्त्वपूर्ण कार्य के सम्पादन हेतु पूर्ण विनय के साथ मंगलाचरण में याद किया जाता है। यथा—

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलं।।

आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन में दो घटनायें प्रमुख हैं—

1. सम्यक् तप करने से आचार्य कुन्दकुन्द को चारण ऋद्धि विद्या की प्राप्ति हो गयी थी जिससे वे पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर अन्तरिक्ष में चला करते थे। अत: आचार्य कुन्दकुन्द विदेह क्षेत्र गये थे और वहाँ से भगवान सीमन्धर स्वामी का उपदेश ग्रहण कर लौटे थे तथा सीमन्धर स्वामी से प्राप्त दिव्यज्ञान का श्रमणों (मुनिसंघों) को उपदेश दिया था।

2. दूसरी कथा में कहा जाता है कि गिरनार पर्वत पर हुए दिगम्बर-श्वेताम्बर वाद-विवाद में आचार्य कुन्दकुन्द को विजय प्राप्त हुई थी।

आचार्य कुन्दकुन्द की अनमोल देन अध्यात्मवाद और आत्मा का त्रैविध्य है। उनकी इस देन की उनके बाद के आचार्यों ने अपने-अपने ग्रन्थों में चर्चा की है और इन्होंने बहिरात्म अवस्था को छोड़कर अन्तरात्मा बनकर परमात्म अवस्था की प्राप्ति का उल्लेख किया है।

रचना-परिचय : आचार्य कुन्दकुन्द की निम्न कृतियाँ उपलब्ध हैं—

1. **प्रवचनसार :** यह प्राकृत भाषा का मौलिक ग्रन्थ है। इसमें 275 गाथाएँ हैं। यह ग्रन्थ तीन अधिकारों में विभक्त है, ज्ञान, ज्ञेय और चारित्र। आचार्य

कुन्दकुन्द की यह बड़ी ही महत्त्वपूर्ण कृति है। यह कृति उनकी तत्त्वज्ञता, दार्शनिकता और आचार की प्रवणता से ओत-प्रोत है। इसमें जैन तत्त्व ज्ञान का यथार्थ रूप बहुत ही सुन्दरता से प्रतिपादित है।

2. **समयप्राभृत (समयसार) :** यह सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक ग्रन्थ है। यहाँ समय शब्द के दो अर्थ हैं। समस्त पदार्थ और आत्मा। इस ग्रन्थ में समस्त पदार्थों अथवा आत्मा का सार वर्णित है। यह ग्रन्थ दश अधिकारों में विभक्त है। इसमें शुद्ध आत्मतत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। इसके विषय का प्रतिपादक ग्रन्थ अखिल वाङ्मय में दूसरा नहीं है।

3. **पञ्चास्तिकाय :** इस ग्रन्थ में कालद्रव्य से भिन्न जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश—इन पाँच अस्तिकायों का वर्णन किया गया है। यह ग्रन्थ दो अधिकारों में विभक्त है। प्रथम अधिकार में द्रव्य, गुण और पर्यायों का कथन है और द्वितीय अधिकार में नौ पदार्थों के साथ मोक्षमार्ग का निरूपण किया है। द्रव्य के स्वरूप को जानने के लिए यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है।

4. **नियमसार :** आध्यात्मिक दृष्टि से यह ग्रन्थ भी महत्त्वपूर्ण है। इसमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र को नियम से मोक्ष का मार्ग कहा है। इस ग्रन्थ में 12 अधिकार तथा 187 गाथाएँ हैं। इसमें निश्चयनय एवं व्यवहारनय को स्पष्ट करते हुए समझाया गया है। यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण और उपयोगी है।

5. **बारस-अणुवेक्खा :** इस ग्रन्थ में अध्रुव, अनित्य आदि बारह-भावनाओं का वर्णन 91 गाथाओं में किया है। संसार से वैराग्य प्राप्त करने के लिए यह ग्रन्थ बहुत महत्त्वपूर्ण है।

इन प्रमुख ग्रन्थों के अतिरिक्त भी कुछ ग्रन्थ और भक्तियाँ उपलब्ध हैं। यथा—

1. दंसणपाहुड	2. चारित्तपाहुड	3. सुत्तपाहुड
4. बोहपाहुड	5. भावपाहुड	6. मोक्खपाहुड
7. लिंगपाहुड	8. सीलपाहुड	9. रयणसार
10. सिद्ध-भत्ति	11. सुद-भत्ति	12. चारित्त-भत्ति
13. जोइ-भत्ति	14. आइरिय-भत्ति	15. णिव्वाण-भत्ति
16. पंचगुरु-भत्ति	17. थोस्सामि-भत्ति (तित्थयरभत्ति)	